OM 19 a_Page 1 and 2 14/01/2015 09:46 Page 1

ओमशान्ति मीडिया

18 जनवरी विश्व शांति दिवस पर विशेष

वर्ष - 15 अंक - 19 जनवरी-I, 2015 पाक्षिक माउण्ट आबू ₹8.00

आध्यात्मिकता भारत की पूंजी है- सोलंकी

विश्व के हरेक देश की अपनी अलग-अलग पहचान रही है, लेकिन आज हम देखते हैं कि उनकी वो पहचान नहीं रही। भारत की वही पहचान आज भी सारे विश्व में बनी हुई है, वो है आध्यात्मिकता, जब तक भारत में आध्यात्मिकता है, भारत ज़िन्दा रहेगा। बिना आध्यात्मिकता के मानव पशु समान है। उक्त विचार हरियाणा के

कार्यक्रम में सम्बोधित करते हुए राज्यपाल महामहिम कप्तान सिंह सोलंकी। मंचासीन हैं ओ.आर.सी. निदेशिका ब्र.कु. आशा, ब्र.कु. बृजमोहन तथा अन्य।

राज्यपाल महामहिम कप्तान सिंह सोलंकी ने गुड़गांव, बोहड़ा कलां, ओम शान्ति रिट्रीट सेंटर के 14वें वार्षिक उत्सव एवं स्प्रीच्युअल कार्निवल के उद्घाटन अवसर पर व्यक्त किये।

उन्होंने कहा कि ये ईश्वरीय विश्व-विद्यालय नर को नारायण बनाने की सेवा कर रहा है। मैं इनके मुख्यालय माउण्ट आबू भी गया हूँ। वहाँ मैंने राजयोग के अभ्यासकर्ताओं को देखा जिनके चेहरे में शान्ति और पवित्रता की चमक स्वाभाविक ही नज़र आती है। वहाँ के वातावरण में शान्ति और पवित्रता के प्रकम्पन आनेवाले विज़िटर्स को आकर्षित करते हैं। राजयोगी भाई-बहनों से मिलने पर जीवन में सुकून की अनुभूति होती है। वो कहीं अन्यत्र महसूस नहीं होती। अगर इस प्रकार के रिट्रीट सेंटर हमारे देश अथवा विश्व में बड़े स्तर पर खोले जाएं तो सरकार का काम काफी आसान हो जाएगा और आतंकवाद एवं भ्रष्टाचार पर भी नियंत्रण हो जाएगा।

कार्यक्रम में बोलते हुए ब्रह्माकुमारीज़ के मुख्य सचिव ब्र.कु.बृजमोहन ने कहा कि ये रिट्रीट सेंटर दिल्ली के कोलाहल से दूर आध्यात्मिक एवं प्राकृतिक सौंदर्य से भरपूर है, यहाँ पर आकर हर व्यक्ति सहज ही मानसिक एवं शारीरिक शान्ति का अनुभव करता है।

ओ.आर.सी. निदेशिका ब्र.कु.आशा ने कहा कि कई लोग समझते हैं कि आध्यात्मिक होना अर्थात् घरबार का त्याग करना। उन्होंने कहा कि अध्यात्म और कर्म दोनों अलग-अलग नहीं हैं, दोनों का समन्वय ही जीवन में सुख, शान्ति एवं शक्ति प्रदान करता है। हमारे इस कार्निवल का उद्देश्य भी यही है कि कैसे परिवारों में पुनः प्रेम एवं सद्भाव का संचार किया जाए। ओ.आर.सी. की संयुक्त निदेशिका ब्र.कु.गीता ने अपने जीवन से जुड़े हुए अनुभवों को सांझा करते हुए कहा कि जब मैं पहली बार ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेन्द्र पर आई तो मुझे शान्ति का बहुत गहन अनुभव हुआ और पवित्रता की शक्ति का मुझे एहसास हुआ जिसके कारण मैं सम्पूर्ण रूप से यहाँ से जुड़ गई।

इनसाइड पर विशेष ...

सदा शक्तियों को आगे रखने में ही सफलता -पेज 6 पर...

इस असार संसार के सार थे ब्रह्मा बाबा -पेज 3 पर...

रूहानी शहज़ादा ब्रह्मा बाबा -पेज 5 पर...

बाबा ने मुझे उड़ता पंछी बनाया -पेज 7 पर...

मन-संताप हरने हेतु मानव मसीहा का उदय

ब्रह्मा बाबा, जिनके अव्यक्त आरोहण को 18 जनवरी 2015 को 46 वर्ष पूरे हुए, का साकार जीवन भी अद्वितीय विशेषताओं से भरा हुआ था। निःसंदेह, ईश्वरीय ज्ञान तो उनके मुखारविन्द से शिव बाबा ने दिया परन्तु उस ज्ञान का प्रैक्टिकल स्वरूप बनकर, उसको जीवन के साँचे में ढ़ालकर, उसको सार, विस्तार और व्यवहार का रूप देकर ब्रह्मा बाबा ने ही हमारे सम्मुख रखा। वे ज्ञान के केवल एक प्रवक्ता ही नहीं थे बल्कि जैसे मिश्री मिठास-स्वरूप होती है वैसे ही वे भी ज्ञान-स्वरूप थे। वे योग के कोई प्रचारक नहीं थे बल्कि योगी जीवन के एक साक्षात् उदाहरण थे। 'योगी जीवन कैसा होना चाहिए?' – वे केवल इसकी व्याख्या नहीं करते थे बल्कि अपने जीवन को योगमय बना दूसरों को भी योग की मस्ती में मग्न करने वाले थे। वे केवल दिव्य गुणों की धारणा की आवश्यकता पर बल ही नहीं देते बल्कि उनका जीवन दिव्य गुणों का एक ताज़ा गुलदस्ता था। 'मनुष्य को अपना तन, मन, धन सेवा में लगाना चाहिए'– वह केवल ऐसा कहा नहीं करते थे बल्कि उन्होंने इसे करके दिखाया। उनका हर संकल्प सेवामय था और अन्तिम श्वांस तक उन्होंने सेवा ही की और वह भी ऐसी कि जैसा कोई कर नहीं सकता।

शिव बाबा ने तो मनुष्यात्माओं को नये विश्व के निर्माण के लिए नया ज्ञान अथवा नया जीवन-दर्शन दिया परन्तु जन्म-जन्मान्तर से भूली-भटकी और दुर्बल हुई आत्माओं को उस ज्ञानामृत रस से सींचने का कर्त्तव्य ब्रह्मा बाबा ने अथक और अदम्य रूप से किया और इस तरह कि जैसा अन्य कोई नहीं कर सकता। शिव बाबा ने यह समझाया कि पवित्रता ही आत्मा का स्वधर्म है और कि कितने भी सितम ढ़ाये जायें परन्तु इस स्वधर्म को न छोड़ना। इस पवित्रता रूपी महाव्रत में आत्माओं को कायम-दायम (स्थायी रूप से स्थित) करने का एक अति महान कर्त्तव्य ब्रह्मा बाबा ने ही निभाया। आज के दूषित कलयुगी वातावरण में जबकि सभी धर्म और सभी ग्रन्थ यह कहते हैं कि स्त्री-पुरुष में वासना भोग का सम्बन्ध स्वाभाविक है, आदिकाल से चला आया है और ईश्वर-सम्मत है और राम एवं कृष्ण की भी मर्यादा के अनुकूल है, उस वातावरण में नव-विवाहित पति-पत्नी के बीच भी धर्म और आने वाले नवयुग की मर्यादा को स्थापन करना एक ऐसा कठिन मामला था जिसे ब्रह्मा बाबा ही ने हल किया। ऐसी स्थिति में जब वर और वधु के माता-पिता, सास-ससुर और भाई-बान्धव सब उनको पुरानी परिपाटी की पट्टी पढ़ाते, तब बाबा ही की यह कमाल थी कि वे उन्हें काम-ज्वर से पीड़ित न होने देते। वे गृहस्थ की नाव में बैठी उन आत्माओं को योग का ऐसा चप्पु हाथ में दे देते कि उनकी नाव आगे सुरक्षित रूप से बढ़ती जाती। वे उन्हें ऐसा और इतना प्यार दे देते कि उन्हें प्यार का अभाव कभी भी महसूस न होता और दैहिक प्यार एक-दूसरे की ओर न खींचता। वे उन्हें ऐसे नशे का प्याला पिला देते कि जिससे उन्हें जवानी का नशा न चढ़कर रूहानी नशा चढ़ जाता। वे उन्हें लोक-कल्याण अथवा जन-सेवा के कार्य में ऐसा व्यस्त कर देते कि उनकी गृहस्थ भावना सेवा-कामना में परिवर्तित हो जाती। इसका फल यह निकलता कि लोग जिस कार्य को असम्भव मानते थे, वह केवल बाबा के प्यार-पुचकार से, उनके पत्राचार से, उनकी प्रेरणा और उपहार से सम्भव सिद्ध हो जाता।

मुझे याद है कि आज से 25 वर्ष पहले एक कन्या और एक युवक का सम्बन्ध, जब दोनों के माता-पिता के आग्रह के परिणामस्वरूप, गृहस्थ-मर्यादा में जोड़ा जाने वाला था तो बाबा ने उन्हें यह पत्र लिखकर भेजा कि वे ऐसा पवित्र दाम्पत्य (युगल) जीवन जीकर दिखायेंगे कि जिसके आगे सन्यासी भी झुक जायेंगे। इस पत्र से उन्हें ऐसी प्रबल प्रेरणा मिली, पवित्रता में ऐसा उनका मन जमा कि उन्होंने असम्भव को सम्भव कर दिखाया। केवल एक पत्र ही से नहीं, बाबा ने जो वर्षों तक उन्हें निरन्तर प्यार दिया,

- शेष पेज 3 पर..